

अच्छी बातें करना एक स्थिति में जाकर बुरा हो जाएगा। अच्छे काम करना ही हमेशा अच्छा रहेगा।

-अज्ञात

अच्छी सांच

नकारात्मक होते ही परीक्षा में फेल

**खुदा** ने मनुष्य को अपनी योजना के अनुसार रचा है। इस योजना की जानकारी के लिए अनिवार्य है कि मनुष्य खुद की समझ प्राप्त करे। उसी तरह, जैसे एक मशीन की कार्यप्रणाली तभी समझ सकते हैं, जब हम उसके बनाने वाले इंजीनियर की ड्राइंग का अध्ययन कर लें। इंजीनियर की बुद्धि के अतिरिक्त कोई नहीं, जो मशीन के उद्देश्य को स्पष्ट कर सके। मनुष्य का मामला भी ठीक ऐसा ही है। मनुष्य के अस्तित्व का पूरे ब्रह्मांड में कोई उदाहरण पाया नहीं जा सकता।



मौलाना वहीदुद्दीन इस्लामिक विद्वान

मनुष्य के रचयिता ने उसकी रचना एक विशेष योजना के अनुसार की है। वह चाहता है कि मनुष्य वर्तमान अपूर्ण संसार में परीक्षा का अंतराल व्यतीत करे और कालांतर में अपने कर्मों के अनुसार वह एक पूर्ण एवं अनंत संसार में सदैव जीने का अधिकार प्राप्त कर ले, जिसका दूसरा नाम जन्नत है। बुरे लोग जन्नत में रहने के लिए नहीं चुने जाएंगे। तो स्वर्ग क्या है? वह एक आदर्श संसार है। इसकी प्राप्ति कैसे हो? इसके लिए दो गुण होना जरूरी है। एक यह कि वह खुदा के एक होने की सच्चाई को स्वीकार करें। जो इस परीक्षा में अपनी योग्यता सिद्ध करेंगे, उन्हें स्वर्ग मिलेगा। दूसरी चीज है, सैद्धांतिक जीवन का निर्वाह। साधारणतः होता यह है कि मनुष्य का चरित्र उसकी भावनाओं, क्रोध, प्रतिशोध, ईर्ष्या, घृणा, प्रतिद्वंद्विता आदि से प्रभावित होता है। यही नकारात्मक भावनाएं हैं, जो मनुष्य के व्यक्तित्व को आकार देती है। परंतु मनुष्य को इन मामलों में अनुशासित बनाना चाहिए।

खुदा की सृष्टि रचना की इस योजना के अनुसार मनुष्य के समस्त जीवनकाल में बार-बार ऐसी परिस्थितियां डाली जाती हैं, जिनमें वह कठिनाइयों का सामना करता है। सृष्टि की योजना में कठिनाइयां व दुःख अविभाज्य अंग हैं। किसी भी व्यक्ति में यह क्षमता नहीं कि वह जीवन को इन कठिन परिस्थितियों से स्वयं को बचा सके अथवा वह परीक्षा या मुसीबत से मुक्त हो जाए। यह व्यवस्था मनुष्य को याद दिलाने के लिए बनाई गई है कि वर्तमान संसार को भोग विलास के लिए नहीं बनाया गया है, बल्कि यह परीक्षा का स्थान है। अत्यधिक विकास के बाद भी खुदा की सृष्टि की जानकारी न होने से हम यह नहीं समझ पाते हैं कि हालात कठिन क्यों हैं। अतः प्रतिक्रिया नकारात्मक हो जाती है और खुदा की परीक्षा में असफल हो जाते हैं।

खुशी के रंग



**सुबह स्कूल**, दोपहर में घर पर होमवर्क और शाम को अंग्रेजी पढ़ाने वाले स्कूल जाना। यही इस बच्ची की दिनचर्या है। स्पेनिश फोटोग्राफर ग्लोरिया गिस्सार्ड हाल ही में कंबोडिया टूर से लौटी हैं- में वहां शिरो टाउन में थी, पता चला कि इस बच्ची ने कभी फोटो नहीं खिंचवाया। 'उसकी आंखों में उम्मीदें थी कि मैं उसे विलक करूं और मैंने यही किया। मेरे पहले ही विलक पर उसने मुझे स्माइल दी, जो हमेशा याद रहेगी।

द न्यूयॉर्क टाइम्स से

एलएनजी बेचकर दुनिया में शीर्ष पर कतर

किसी उत्पादन का सलीके से प्रचार किया जाए, तो वह देश की तस्वीर बदल देता है। इसका बड़ा उदाहरण कतर है, जिसकी अर्थव्यवस्था 20 साल पहले मात्र मछली उत्पादन पर टिकी थी। आज यह देश ईंधन के क्षेत्र में सबसे बड़ा बनकर उभरा है। कतर सबसे ज्यादा प्राकृतिक

• स्टैनले रीड, वैश्विक अर्थव्यवस्था के विश्लेषक

गर्मियों की सुबह, समुद्र में जहाज के ऊपर 40 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान। ऐसी स्थिति में कुछ लोग पाइप जोड़ने का काम कर रहे हैं। पाइप जुड़ने ही मशीन से प्रेशर खोला जाता है और चेहरे पर ठंडक का फव्वारा पड़ता है। यह ठंडक होती है 'लिव्क्विड नेचुरल गैस' (एलएनजी) की, जो पेट्रोलियम ईंधन का विकल्प है। कई देशों में इसका उपयोग हो रहा है।

एलएनजी की बंदौलत कुछ ही सालों में कतर ऊर्जा का बादशाह बन गया है। नेचुरल गैस के जिस रूप में इसे निकाला जाता है, तब इसका तापमान माइनुस -126 डिग्री सेल्सियस होता है। इसे अलग-अलग भागों में बांटकर लिक्विफाइड किया जाता है। समुद्र के अंदर से पंपिंग के जरिये इसे जहाज तक लाया जाता है और फिर संयंत्र में प्रोसेस कर इसे दुनियाभर में पहुंचाया जाता है। कतर के समुद्र में एलएनजी के विशाल भंडार हैं। वहां की सरकार एलएनजी का सबसे बड़ा उत्पादक देश बन गया है। उसके अल रेकॉयत जहाज का संचालन नौदलवेड्स की रॉयल डच शेल करती है।

**मछली के कारोबार पर निभरता :** 20 साल पहले कतर की अर्थव्यवस्था मछली पकड़ने एवं मीतियों के लिए गोताखोरी पर निभर

एशिया को ध्यान में रखते हुए कतर दूसरे महाद्वीपों में भी व्यापार कर रहा है। इसके मद्देनजर सऊदी अरब, इराक और इरान जैसे खाड़ी देशों का ध्यान अब एशिया पर है जहां ऊर्जा संयंत्रों के लिए ईंधन की मांग बढ़ रही है।

थी। आज वह एलएनजी के निर्यातकों में सबसे ऊपर है। 1970 के दशक में डच शेल कंपनी ने कतर में नेचुरल गैस भंडार का पता लगाया था। तब नेचुरल गैस का कारोबार नहीं जैसा था। यूरोप के उपभोक्ता भी दूर थे, क्योंकि यह गैस वहां पहुंचाना आसान नहीं था। इस कारण डच शेल कंपनी दूर हो गई और प्रोजेक्ट ठंडे बस्ते में चला गया था। कतर और उसके आमीर हमद बिन खलीफा अल-थानी ने मलेशिया और इंडोनेशिया का उदाहरण देखकर 1990 के दशक में एलएनजी का प्रचार शुरू किया। इससे उन्हें निवेशक मिले। कतर सरकार और उसके सहयोगी इस कारोबार को नए स्तर पर ले गए। उन्होंने कम लागत व ज्यादा उत्पादन वाले संयंत्र स्थापित किए। मार्केट रिसर्च फर्म आईएचएस की 2014 की रिपोर्ट के अनुसार कतर ने अपने बल पर वैश्विक स्तर पर एक तिहाई एलएनजी का निर्यात किया। अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया भी ऐसी ही महत्वकांक्षा रखते हैं।

गैस (एलएनजी) का निर्यात करता है। भारत, चीन और जापान जैसे देश इसके उपभोक्ता हैं। यह देश आज पश्चिम को टक्कर दे रहा है। कतर ने यह सफलता सहयोगी कंपनियों के साथ हासिल की है। उसने ऐसे संयंत्र स्थापित किए हैं, जो कम लागत में ज्यादा उत्पादन करते हैं।

**20 साल में बदला परिदृश्य :** 20 साल से कम समय में कतर एलएनजी का सबसे बड़ा निर्यातक बन गया। वर्ष 2014 में पांच एशियाई देशों ने वैश्विक निर्यात की 70 प्रतिशत एलएनजी आयात की है। एलएनजी से कतर को अत्यधिक लाभ हुआ और वह प्रति व्यक्ति उत्पादन की दृष्टि से सर्वाधिक आय वाला देश बन गया। कतर ने 24 करोड़ मीट्रिक टन सालाना एलएनजी का निर्यात किया। इससे उसे 11 हजार 340 अरब रुपए का व्यापार मिला। आईएचएस में चीफ गैस स्ट्रेटेजिस्ट माइकल स्टॉर्पर्स कहते हैं- कतर एलएनजी का बड़ा निर्यातक बना, बल्कि उसके प्रोजेक्ट भी शुरू हुए। बड़े जहाज लगाकर वह कम समय में ज्यादा गैस बेच रहा है। कतर का एलएनजी भंडार राजधानी दोहा से कुछ दूर 'रस लाफन' में है। कंपनी 'कतर-गैस' के ए-जीएल्यूटिव इब्राहिम मवाली कहते हैं, हमने कड़े फैसले लिए और कारोबार बढ़ाया। ऐसा नहीं करते, तो एलएनजी को इस स्तर पर नहीं ला पाते। आज भी उत्पादन एवं प्रसंस्कृत की क्षमता के आधार पर कतर ने एलएनजी के दाम कम बनाए रखे हैं। कतर की महत्वकांक्षा अमेरिका और यूरोप को गैस बेचने की रही है, लेकिन उत्तरी अमेरिका में इसका उत्पादन बढ़ने से ऐसा नहीं हो पाया। यही कारण है कि कतर से गैस का ज्यादा निर्यात चीन, भारत और दक्षिण कोरिया जैसे देशों में ज्यादा रहा है। इन देशों से कहीं आगे जाकर कतर का बड़ा उपभोक्ता है, जिसके ऊर्जा संयंत्र 2011 में फुकुशिमा परमाणु हादसे के बाद अब नेचुरल गैस से चलते हैं। © The New York Times

**कतर की वैश्विक हिस्सेदारी**

**वैश्विक स्तर पर एलएनजी का कारोबार 242.0 मिलियन मीट्रिक टन है, जिसमें कतर की हिस्सेदारी 76.2 है।**

**मुख्य निर्यातक देश 2014**

मिलियन मीट्रिक टन	कुल हिस्सेदारी	
<b>कतर</b>	<b>76.6</b>	<b>31.6%</b>
मलेशिया	25.0	10.3%
ऑस्ट्रेलिया	23.2	09.6%
जाइजीरिया	19.4	08.4%
इंडोनेशिया	17.6	07.3%

**मुख्य आयातक देश 2014**

मिलियन मीट्रिक टन	कुल हिस्सेदारी	
जापान	88.7	36.6%
दक्षिण कोरिया	37.8	15.6
चीन	19.8	08.2
<b>भारत</b>	<b>14.5</b>	<b>06.0</b>
ताइवान	13.6	5.6

(स्रोत : आईएचएस एनडी)

तो ये करें...

खुशी चाहते हैं, तो बचपन की सीख अपनाएं

- **एसे मिलती है खुशी**
- **वच्चों के आंसू बेशकीमती होते हैं :** इन्हें निकलने मत दीजिए।
- **वच्चों की जिज्ञासा गहरी होती है :** उसे शांत कीजिए।
- **वच्चों का दुख तीव्र होता है :** इसे उनसे ले लीजिए।
- **वच्चों का दिल कोमल होता है :** इसे कठोर मत बनाइए।

**यह दिलचस्प है कि जिंदगी के सबसे अच्छे सबक वच्चों की किताबों में मिलते हैं और बहुत संभव है कि बड़े होने पर हमें यह याद न रहें। लेकिन यह भी सही है कि बचपन के खेल और याद की गई कई बातें बड़े होने पर नए अर्थों में सामने आती हैं। इस बार नो निर्गेटिव लाइफ बचपन की सीख को समर्पित -**

**काम में छिपे खुशी के पहलू को ढूंढ लीजिए**

हर काम में खुशी की कोई बात होती है। आपको उस पहलू को ढूंढना है। काम ही खुशी में बदल जाएगा। - पीएल ट्वेसट, मैरी पॉपिस

सुबह उठने के बाद सिर्फ दो मिन्ट शोषे के सामने खड़े हो जाइए और कल्पना कीजिए कि दिनभर में क्या हासिल करना चाहते हैं। जो भी काम करें उसमें मन लगाएं, ऐसा करेंगे तो ही खुशी का अहसास होगा और सफलता मिलेगी।

**भलाई का कोई काम बेकार नहीं जाता**

दूसरों के लिए कुछ न कुछ करते रहिए। बस में अपनी सीट किसी जरूरतमंद को दे दीजिए। किसी के लिए दरवाजे खोल दीजिए। किसी अजनबी के कपड़ों की तारीफ कर दीजिए। इससे सकारात्मक ऊर्जा पैदा होगी, जो ताकत बनेगी।

**दोस्तों से बात करें, हिम्मत मिलेगी**

हर तर्क के तीन पक्ष होते हैं। आपका पक्ष, मेरा पक्ष और सही पक्ष। - पंचतंत्र

अपनी समस्या स्वीकार कीजिए, चार साथियों को उसके बारे में बताइए। आपको हिम्मत मिलेगी, हो सकता है वे आपको मदद कर पाएं। आपको काम के अलग-अलग पक्ष और काम न हो पाने के तर्क मिलेंगे। इस विचार-विमर्श से सही बात सामने आएगी। काम को पूरा करने की ताकत आएगी।

**वच्चों के खेल में शामिल हो जाइए**

इंसान अपने करीब तब होता है, जब गंभीर होता है, जैसे बच्चे खेल में होते हैं। - हेरोडोटस, ग्रीक इतिहासकार

खेलना हर उम्र में लाभप्रद है। बड़ों को भी यह उतना ही आनंद देता है, जितना बच्चों को। खेल से तनाव कम होता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि मिट्टी में खेलने से व्यक्ति सीधे माइक्रोकोस्मिक बैक्टीरिया के संपर्क में आते हैं इससे दिमाग में सेरोटोनिन का स्तर बढ़ता है जो आराम देता है, हिम्मत देता है।

तेज हवाओं से ऐसे बचाई जा रही हैं गगनचुंबी इमारतें

**मिशेल हिगिन्स**, रिवाल एस्टेट की विश्लेषक

पता उड़ाने वाले जानते हैं कि यदि वह एक ओर झुक रही हो, तो उसके दूसरी तरफ धगे का गुच्छा बांधने से संतुलन आ जाता है। कुछ इसी तरह मैगडलिन के बिल्डर गगनचुंबी इमारतों के साथ कर रहे हैं। वहां जगह की भारी कमी के कारण गगनचुंबी इमारतों से सेंट्रल पार्क और उसके आगे तक हेलिकॉप्टर व्यू की मांग बढ़ रही है। थनाइय वर्ग के लोग ऐसी इमारतों में व्यू वाले फ्लैट के लिए चाहे जो कीमत देने के लिए तैयार रहते हैं। डेवलपर भी कम जगह में पतली व ऊंची इमारतें बना रहे हैं। कुछ ऐसी हैं, जो पहले नहीं देखी गईं। उदाहरण के तौर पर मैगहन की 57वीं स्ट्रीट में 10 पतली गगनचुंबी इमारतें बना रही हैं। उनकी ऊंचाई 1000 फीट से ज्यादा रहेगी।

कनाडाई कंसल्टिंग इंजीनियर रोवन विलियम्स और इरविन के अनुसार साल में एक बार भी 80 किमी प्रतिघंटे की रफ्तार से हवाएं चलें, तो वह टावर को आधा फीट तक हिला देती हैं। इसी तरह 50 साल में एक बार भी अगर 160 किमी प्रतिघंटे की रफ्तार से हवाएं चलें, तो टावर दो फीट तक हिल सकता है। इमारतों के सुरक्षा व जोखिम का सामना करने में सक्षम होने की बातों में अक्सर इसका उल्लेख नहीं होता। यदि इमारत का ऊपरी हिस्सा हिलने लगता है, तो लोगों को चक्कर आते हैं। वे इसे भूकम्प समझने

लगते हैं, उनमें डर बैठ जाता है। इससे बचने के लिए डेवलपर टावर के ऊपरी हिस्से में डेम्पिंग सिस्टम या काउंटरवेट (प्रतिभार, ऐसी वजनी चीज जो दूसरे भार का संतुलन बनाती है) रख रहे हैं।

**संतुलन बनाए रखता है**

लोहे या कंक्रीट के डेम्पर का वजन 300 से 800 टन होता है। उसे संचालित करने के लिए अन्य उपकरण, 1000 वर्गफीट जगह एवं दो मंजिल बराबर ऊंचाई की जरूरत पड़ती है। उसे स्ट्रक्चर की दीवारों पर पिस्टन सिस्टम व स्प्रिंग माउंट से जोड़ा जाता है। उसका काम इमारत के उस हिस्से के हिलने पर उसे वापस मूल स्थिति में लाना होता है। दूसरी तरह का डेम्पर भी होता है, जिसमें लोहे की जगह टैक में लाखों लीटर पानी भरा जाता है। इमारत के भारी-भरकम बोझार में इसका उल्लेख नहीं होता है और न ही कोई डेवलपर इस बारे में बात करता है। खासतौर से पेटेहाउस की खरीदारी में।

हाइड्रॉज टावर डिजाइन करने वाली फर्म डीसिमोन इंजीनियर्स के प्रेसीडेंट स्टीफन डीसिमोन के अनुसार यह अविश्वसनीय तकनीक है, लेकिन कठे उसकी बात नहीं करता है। न्यूयॉर्क सिटी के बहुचर्चित 1396 फीट ऊंचे '432 पार्क एवें्यू' टावर में दो बड़े डेम्पर लगाए गए हैं। वर्ष 2014 में उसके एक पेटेहाउस की कीमत 600 करोड़ से अधिक थी। © The New York Times

